मध्यकालीन साहित्य में सामाजिक चेतना

डॉ. वीरेन्द्र सिंह कश्यप

धर्म प्रचारकों और आचार्यों ने जिन दार्शनिक विचारों और अनुष्ठानों को प्रचलित किया, उनकी अभिव्यक्ति तत्कालीन साहित्य में हुई। यह आंदोलन उत्तर भारत में निर्गुण और सगुण की दो धाराओं में प्रवाहित हुआ। निर्गुण भक्ति में चिंतन एवं सुधार की भावना अधिक तीव्र थी और सगुण भक्ति में आत्मसमर्पण,शरणागति जैसी भावनाएं महत्वपूर्ण समझी जाती थी। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि 'भागवत' जो भक्ति आंदोलन का मूल ग्रन्थ है, इन दोनों रुपों को अंगीकार करता है। इन दोनों भक्ति रुपों के अलग–अलग अस्तित्वों के कारण साधना जगत में ज्ञान को विशेष महत्व देने वाले आचार्यों का आविर्भाव तथा भक्ति साहित्य का प्रचार–प्रसार संभव हो सका। इस आंदोलन ने भारतीय संस्कृति एवं इतिहास में एक नये युग का उद्घाटन किया। ब्रह्म की एकता पर सभी भक्ति संप्रदायों ने अपना विश्वास जगाया। ईश्वर की आराधना, उसके प्रति प्रेम तथा गुरु भक्ति के सिद्धांतों को इस आंदोलन ने सांप्रदायिक जगत में पर्याप्त लोकप्रियता प्रदान की। जाति–पांति और ऊंच–नीच के भावों को दूर करने का इस आंदोलन ने प्रयत्न किया। पारिवारिक जीवन में मर्यादित आचरण, नारियों को सम्मान तथा सुरक्षा, विभिन्न संप्रदायों के बीच संघर्ष को मिटाकर समन्वय की प्रवृत्ति को बल मिला। इस आंदोलन ने मनुष्य समानता, राष्ट्रीय एकता की भावना का पोषण किया। धर्म–यात्राओं और शास्त्रार्थों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में भक्तों के बीच एकजुटता का भाव पैदा हुआ।'कीर्तन सेवा', 'पर्व', 'त्यौहार', 'उत्सव' आदि का प्रबंध करके इस आंदोलन ने व्यक्तिगत एवं सामूहिक उपासनाओं द्वारा हृदय परिवर्तन के अवसर प्रदान किये। उपासना के क्षेत्र में पवित्रता का संदेश फैलाकार वाह्याडम्बरों की निंदा की गई। एकेश्वरवाद का महत्व बताकर उपासना जगत के कई भ्रष्टाचारों को दूर किया गया। इस आंदोलन ने धार्मिक सहिष्णुता के भाव को जागृत करके, विदेशी धर्मों के आक्रमणों से हिंदू धर्म को सुरक्षित रखने का प्रयास किया। इस प्रकार भक्ति–आंदोलन ने कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत की जनता को सांस्कृतिक रुप से एक करने का प्रयास किया।